श्रीधन्वन्तरये नमः

वैद्यसम्मेलन-पत्रिका

निखिलभारतवर्षीयवैद्यसम्मेलनकी

द्वैमासिकी मुखपत्रिका

चतुर्थ वर्ष } कार्तिक-मार्गशीर्ष सं० १९७४ वै० { प्रथम संख्या

वार्षिक मूल्य २)

सभासदोंको मुफ्त

विषय सूची।

श्रीकिशोरीदत्त शास्त्री,
श्रीयादवजी त्रीकमजी आचार्य। } सम्पादक

समाचार

वैद्योंको पत्र—बम्बईके हेल्थ आफिसर डाकृर जे. ए. टर्नर-ने बम्बईके वैद्योंको सूचना दी है कि बाम्बे म्युनिसिपल एकृकी २१ वीं दफाके अनुसार आपलोग प्लेग, हैज़ा, एनटेरिक फीवर, शीतला, स्कारलेट फीवर, यलोफीवर, टाइफस, रिलेपसिंग फीवर, क्षय और कुष्टके जिन रोगियोंकी चिकित्सा करें उनकी सूचना एकसक्यूटिव हेल्थ-आफिसरको दे दिया करें। इस विषयके छपे हुए फार्म मांगने पर मिल सकेंगे। इसका यही उद्देश्य है जिससे संक्रामक रोगियोंकी संख्या ठीक ठीक मालूम हो सके। म्युनिसिपल एकृकी ४६० दफाके अनुसार जो वैद्य किसी बीमारकी अन्तिम अवस्थामें पहुँचे उसे उसकी मृत्युकी सूचना म्युनिसिपल कमिश्नरको कारण सहित देनी चाहिये।

झूठी खबर—बम्बईके आयुर्वेद तथा अन्य कई पत्रोंने प्रसिद्ध किया है कि लाहौरके सम्मेलनके सभापति पदको श्रीमान् रीवां नरेशने स्वीकार कर लिया है; परन्तु यह खबर झूठी है। अभी तक किसी सज्जनका निर्वाचन नहीं हुआ है।

ऐतिहासिक वैद्य—पूनेके पेशवाओंके कुलोपाध्याय घरानेके इनामदार (जागीरदार) श्रीयुक्त पुरुषोत्तम गंगाधर (भाऊ साहब) कर्वेका अगस्त महीनेमें ७० वर्षकी आयुमें स्वर्गवास हो गया। आप आर्य-वैद्यकमें निष्णात थे और गरीब रोगियोंको मुफ़्तमें दवा दिया करते थे।

सभासदकी मृत्यु—स्थायीसमितिके सभासद भरतपुरके पंडित गंगाप्रसाद शास्त्री भिषग्रत्नको ३० वर्षकी अवस्थामें ही मृत्यु से हम बहुत दुःखी हुए हैं। इस ही अगहन महीनेमें उनके पिता, काका, काकी, और स्त्रीका भी स्वर्गवास हुआ। आपके एक छः वर्षकी लड़की और ४ वर्षका लड़का निस्सहाय अवस्थामें विद्यारत्न, जगन्नाथ दास जी विशारदकी संरक्षकतामें हैं। शास्त्री जी वैद्य-सम्मेलनको भरतपुरमें करनेके उद्योगमें थे।

॥ श्रीधन्वन्तरयेनमः ॥
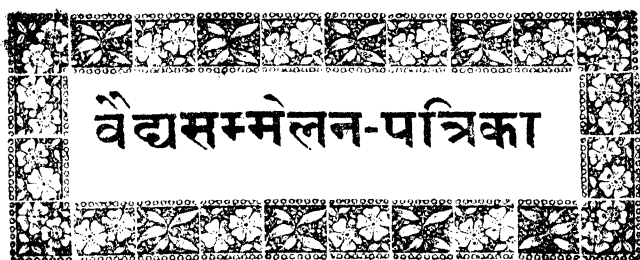
निखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनकी स्थायीसमिति
और आयुर्वेदविद्यापीठकी ओरसे प्रकाशित ।

चतुर्थ वर्ष } कार्तिक-मार्गशीर्ष सं० १९७४ वै० { प्रथम संख्या

विद्यालयका डेपुटेशन ।

विद्यालयका स्थान

श्रीमान् रीवां महाराज निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके आयुर्वेद महाविद्यालयके लिये जैसा आग्रह प्रकाश कर रहे हैं, जिस प्रकार उसके लिये वे सदा ध्यान रखते हैं, उससे आशा हो रही है कि अब विद्यालयके स्थापित होनेमें अधिक विलम्ब नहीं है। श्रीमान्की ही प्रेरणासे गत वर्षके समान इस वर्ष निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके वैद्यों-का एक डेपुटेशन दिल्लीमें देशी राजाओंकी कानफरेंसके समय फिर गया था। पांच नवम्बरसे १० नवम्बर तक उसने वहां अपना उद्योग किया। भारतके प्रायः सभी प्रान्तोंके प्रभावशाली वैद्योंका इसमें समावेश हुआ था। मद्रासले वैद्यरत्न पण्डित डी० गोपालाचार्लु

आये थे, बम्बईसे वैद्यपञ्चानन पण्डित जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी, राजपूतानेसे आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी, पञ्जाबसे कविविनोद पण्डित ठाकुरदत्त शर्मा, पटियालासे वैद्यपञ्चानन पण्डित रामप्रसाद शर्मा, कलकत्तेसे महामहोपाध्याय कविराज गणनाथसेन, वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथसेन, कविरत्न कविराज ज्ञानेन्द्रनाथसेन और कविराज श्रीसुधीन्द्रनाथसेन पहुँचे थे। संयुक्तप्रान्तसे उत्साही डाक्टर प्रसादीलाल झा, एल. एम. एस., तीक्ष्णमति पण्डित रघुबरदयाल वैद्यशास्त्री और जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य गये थे। यही नहीं, दिल्लीके सभी प्रसिद्ध वैद्योंने इस काममें योगदान दिया, इसके साथ सहानुभूति दिखायी और इस उद्योगकी सफलताके लिये सब प्रकारका प्रयत्न करने का वचन दिया।

कार्यकी आंशिक सफलतासे ही कार्यकर्ताओंका उत्साह बहुत बढ़ जाता है। आनन्दकी बात है कि दिल्लीमें जिन जिन नरपतियोंसे भेंट हुई, उनमेंसे सभीने इस कार्यके साथ सहानुभूति दिखायी, इसमें सहायता करनेका वचन दिया और इस कार्यमें आवश्यक परामर्श देते रहनेके विषयमें आश्वासन दिया। केवल एक नरपतिका मन इस कामके स्थायी रूपसे चलते रहनेके विषयमें डांवा डोल है। परन्तु उससे हमारा उत्साह घटता नहीं बल्कि और भी अधिक दृढ़, प्रतिज्ञाशील और उद्योगमें चीमड़पनकी प्रेरणा करता है। अनेक विषयके अनेक उद्योगियोंने अबतक अपने अपने विषयोंमें उद्योग किये हैं। उनमेंसे कुछ सफल हुए हैं और अधिकांश पानीके ऐसे बबूले थोड़े ही दिनोंमें शान्त हो गये हैं। इन्हें देख लोगोंके चित्त साशंक हो तो आश्चर्य नहीं है; परन्तु हम वैद्योंका उद्योग ऐसा प्रबल होना चाहिये कि सभी बाधाएं मारी मारी फिरें, सब प्रकारकी शंका-कुशंकाओंको मनमें लानेका किसीको अवसर ही न मिले। वैद्यसम्मेलनकी संस्था रजिस्टर्ड है, उसका काम किसी एकके हाथों नहीं, निखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके समय चुने हुए प्रजाकीय और वैद्योंके प्रतिनिधियों द्वारा होता है। उसके कामकी देखभाल करनेके लिये सभापतिसे लेकर प्रत्येक सभासद, प्रत्येक नरपतिसे लेकर देशके कार्यों पर दृष्टि रखने वाले प्रत्येक देशहितैषी, प्रत्येक अमीर गरीब सबको अधिकार है। सब लोग उसकी सफलताके

लिये उद्योग करनेका स्वत्व रखते हैं। वैद्यसम्मेलनकी कार्यावली जिस प्रकार प्रतिवर्ष दृढ़ और उसकी जड़ जिस प्रकार गहरी होती जा रही है, उससे हमें इस बातका भय नहीं होता कि इस कामकी सफलतामें किसी भी प्रकारसे कोई रुकावट हो सकेगी। जिस विद्यालय फण्डके कोषाध्यक्ष स्वयम् श्रीमान् रीवांनरेश हैं, जिसकी कमेटीके मन्त्री महामहोपाध्याय कविराज गणनाथ सेन हैं, जिस समितिका परिचालन करनेके लिये कितनेही नरेश, आनरेबल मेम्बर, उत्साही वैद्य, कर्तव्यदक्ष देशहितैषी प्रभृति हैं हमें तो उसमें सफलताकी ही आशा है; और उसी आशाको लिये हुए हम लोग इस आन्दोलनमें बराबर प्रवृत्त हैं। तथापि इन सब बातों पर ध्यान रखते हुए विद्यालय समितिको बड़ी ही चतुराई, बड़ी ही दृढ़तासे अपना काम करते रहना होगा।

श्रीमान् देशी नरेशोंको दिल्लीमें अवकाश बिलकुल ही नहीं था; तथापि यह देखकर हम लोगोंका उत्साह बढ़ जाता था कि कोई श्रीमान् नरेश कार्यवश बाहर जानेको तैयार होने पर भी मिलनेके लिये ठहर गये, कोई कपड़े पहनते पहनते ही मिले, कोई अपनी स्पीच तैयार करते हुए ही मिले, कोई भोजनसे उठते ही मिले, कोई क्षौर कराते ही मिले। किसीने घण्टों बैठकर सब व्यवस्था सुनी। क्या ऐसी घटनाएं यह सूचित नहीं करतीं कि आयुर्वेदका आन्दोलन देशी नरपतियोंके हृदयमें कुछ तो भी अनुराग उत्पन्न करा सका है। यही नहीं, देशकालज्ञ सभी नरपति यह हृदयसे चाह रहे हैं कि अपनी यह उपयोगी प्राचीन विद्या डूबने न पावे, इसकी अवश्य और शीघ्र उन्नति होनी चाहिये। इसके प्रमाणमें हम श्रीमान् नवाबजादा पालनपुरके वाक्य कभी नहीं भूल सकते, जिन्होंने कहा था कि "मुझे आश्चर्य तो इस बातका है कि यह आन्दोलन इतनी देरीसे कैसे उठाया गया, यह तो बहुत पहले ही हो जाना चाहिये था, खैर अब सही इसे शीघ्र और अवश्य पूर्ण करना चाहिये।" अवश्य ही डेपुटेशन वालोंको इस बातका खेद रहा कि कुछ तो समयाभावसे, कुछ नरेशोंके कार्याधिक्यसे और कुछ प्रबन्धसम्बन्धी अड़चनोंसे ऐसे नरपतियोंसे भेंट न हो सकी जिनसे मिलना केवल आवश्यक ही नहीं था; किन्तु जिनकी विश्रुत कीर्तिसे विश्वास था कि डेपुटेशनकी

बात सुनतेही वे अवश्य उससे मिलते। जोहो १४ नरपतियोंके डेपुटेशनने दर्शन किये, दो तीन संस्थानके नरपतियोंके दर्शनका सुअवसर (कार्यवश बाहर जानेके कारण) न मिलने पर भी दीवान साहबोंसे बातचीत हुई है। रीवां, भोर, डूंगरपुर, पालनपुर, दतिया, खैरागढ़, सारंगगढ़, झालावाड़, पटियाला, नाभा, नवानगर, धार, बिलासपुर और सैलानाके श्रीमान् नरपतियोंने डेपुटेशनसे भेंट की। सभीने इस कार्यके साथ सहानुभूति प्रकट की और सहायताकी आशा दिलायी। श्रीमान् डूंगरपुर नरेश और श्रीमान् दतिया नरेशने संरक्षक होना भी स्वीकार किया है। कूचबिहार, धार सीतामऊ, झालावाड़ और दतियाके उत्साही और देशहितैषी दीवान साहबोंने इस कार्यमें सहानुभूति पूर्वक बहुतसे परामर्श दिये। श्रीमान् अलवर नरेशने तीन हज़ार रुपये का दान डेपुटेशन को सौंप दिया, आशा है इस कार्यकी गुरुता और महत्ताके विचारसे यह दान प्राथमिक होगा। कार्यारम्भ होते ही श्रीमान् जयपुर नरेशसे पांच हज़ार रुपये की सहायता कार्यारम्भ करने के लिये आ जावेगी। सोलह हज़ार रुपयेकी श्रीमान् रीवां नरेशकी सहायता मिली हुई ही समझिये।

इस प्रकार प्रस्तावनाका आरम्भ होगया है, अब कार्यारम्भ होना चाहिये। दिल्लीमें श्रीमान् रीवां नरेशकी कोठीमें डेपुटेशनके सज्जनोंने इस विषय पर परामर्श किया कि विद्यालयका स्थान कहां हो। बहुत वादविवाद और विचारके पश्चात् यही निश्चय हुआ कि इस विद्यालयका स्थान प्रयागराज रक्खा जाय, जिससे सभी प्रान्तोंके लोगोंको सुविधा हो। श्रीमान् रीवां नरेशकी सम्मति और आदेश है कि प्रयागमें भूमि लेनेका शीघ्र प्रयत्न हो। यही नहीं, बल्कि जब तक भूमिका प्रबन्ध हो, उस पर आवश्यक इमारतें बनें, तब तक किरायेके मकानमें ही कार्यारम्भ हो जाय। श्रीमान्‌की सम्मति है कि पहले उन वैद्योंकी एक विशेष कक्षा खोली जाय जो आयुर्वेदका ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं; किन्तु युवा और उत्साही हैं और उन्हें शरीरका प्रत्यक्ष ज्ञान तथा शस्त्रचिकित्साका अभ्यास करना बाकी है। ऐसे वैद्योंकी श्रेणी खोल कर उन्हें शरीर और शस्त्रचिकित्साका अभ्यास कराया जाय। इनके तैयार करनेमें अधिक समय नहीं लगेगा। इस प्रकार जब तक विद्यालय अपने

भवनमें आयगा तब तक शास्त्रक्रियाकुशल कुछ वैद्योंका एक दल तैयार हो रहेगा और उससे भविष्यके कामोंमें बहुत सहायता मिलेगी। श्रीमान् की सम्मति है कि पहले इमारतोंमें अधिक खर्च न करके शास्त्रागार, प्रदर्शनी और शस्त्रचिकित्साके लिये पक्का और उपयुक्त स्थान तैयार कर लिया जाय। पढ़ाईके लिये और औषधिनिर्माणके लिये पहले काम चलाऊ स्थान इस प्रकारसे बनाया जाय कि अभी उससे काम निकले और पीछे इमारतें तैयार हो जाने पर ये अन्य मामूली कामोंमें आ सकें। श्रीमान्की सम्मति इतनी बहुमूल्य और समयानुकूल है कि इसमें भिन्नमत हो ही नहीं सकता। इसलिये नि० भा० वैद्यसम्मेलनकी संस्था इसके अनुसार शीघ्र ही कार्य्य बढ़ानेका उद्योग कर रही है। सूत्रपातका अवसर आ गया है, उसे आगे बढ़ाना, चलाना, दृढ़ करना वैद्यों-के हाथ है, कार्यकर्त्ताओंके हाथ है। ईश्वर करे यह काम अब महीनों नहीं, दिनोंमें सम्पन्न हो। एक बार बोलो धन्वन्तरि महा-राज की जय! विद्यालयके सहायक नरपतियों की जय!!

निन्दनीय वर्ताव !!

मेडिकल एक्ट में "निन्दनीय वर्ताव" (Infamous Conduct in any professional respect) का एक वाक्य है; परन्तु इसकी कोई व्याख्या नहीं है। इसलिये इस निन्दनीय वर्तावकी ओटमें मेडिकल कौंसिल खूब टट्टीकी ओट शिकार खेल सकती है और चाहे जिस डाक्टरके साथ निन्दनीय वर्ताव कर सकती है। मद्रास-की मेडिकल कौंसिलने डाक्टर कृष्ण स्वामी आयर पर एक धर्मार्थ औषधालयका निरीक्षण करनेके कारण निन्दनीय वर्तावका अभियोग लगाया था और इधर बम्बईकी कौंसिलने डाक्टर पोपट प्रभुराम पर अपने पिताके स्थापित आयुर्वेद विद्यालयका सञ्चालन करनेके कारण नोटिस दिया था कि आपका नाम डाक्टरोंके रजि-स्टरसे खारिज क्यों न कर दिया जाय। मद्रासका मामला तो किसी तरह पहले ही निपट गया था; परन्तु बम्बईका अब तक पड़े सड़ रहा था। इसी पर आनरेबल पटेलने बम्बईकी लेजिस्लेटिव

कौंसिलमें एक बिल पेश किया, जिसकी व्याख्याके अनुसार "निन्द-नीय वर्ताव" का खुलासा हो जाता और आयुर्वेदसे सम्बन्ध रखनेका निन्दनीय आक्षेप किसी डाकृर पर न आसकता। यही नहीं, डाकृर पोपटके ऊपरका नोटिस भी आपही आप नष्ट हो जाता; परन्तु पाठकोंको स्मरण ही है कि उक्त बिल बम्बई सरकारके बुलाये हुये भड़ैत पिट्टू बिगारियोंने किस प्रकार रद्द करा दिया!

अतएव डाकृर पोपट प्रभुरामको अपने वकील श्रीयुत भूला-भाई देसाईके द्वारा अपना पक्ष समर्थन करना पड़ा। अन्तमें मेडि-कल बोर्डने फैसला किया कि डाकृर पोपट प्रभुरामके विरुद्ध यह नहीं सिद्ध हुआ कि उन्होंने अपने व्यवसायको शोभा न देने योग्य निन्दनीय वर्ताव किया है; अतएव इनका नाम रजिस्टरसे अलग करनेकी आवश्यकता नहीं है। डाकृर पोपट प्रभुरामके अनुकूल फैसला होने पर भी इससे किसीका समाधान नहीं हो सकता। जब तक निन्दनीय वर्तावकी स्पष्ट व्याख्या न कर दी जाय तब तक आज न सही, मौका पाकर मेडिकल कौंसिल चाहे जिस पर वार करने से क्यों चूकने लगी। आजकल देशहित की लहर देशमें फैल रही है, अपनी प्राचीन चिकित्साप्रणालीकी उन्नति करनेकी ओर सबका ध्यान आकर्षित हो रहा है। ऐसी दशामें ज्योंही कोई डाकृर ऐसे काममें सम्मिलित होगा, त्योंही कौंसिल पटेबाजी खेलने लगेगी। आज डाकृर पोपट सरीखे प्रसिद्ध मनुष्य पर वार करनेकी उसकी हिम्मत नहीं पड़ी; किन्तु किसी कम धैर्यवाले डाकृर पर बेधड़क वार करनेके लिये उसका कौन हाथ पकड़ेगा। अतएव प्रत्येक देशहितैषी, प्रत्येक देशी विद्याके अभि-मानी और प्रत्येक आत्माभिमानी पुरुषका कर्तव्य है कि इस एक्ट को संशोधन करनेके लिये प्रयत्न करे और देशी वैद्यकको भय-मुक्त करनेका पवित्र कर्तव्य पूर्ण करे। कौंसिलके मेम्बरों को हिम्मत न हारकर मौका पाते ही फिर बिल उपस्थित करना चाहिये। नहीं तो इस "निन्दनीय वर्ताव" शब्दके सहारे मेडिकल कौंसिल का निन्दनीय वर्ताव देशी डाकृरों और देशी चिकित्सापद्धतियों पर होता ही रहेगा।

स्थायी समितिके अधिवेशन ।

प्रथम अधिवेशन

आषाढ़ शुक्ल ५ तारीख २४ । ६ । १७को स्थायी समितिका प्रथम अधिवेशन पं० केदारनाथ चौबे वैद्यके सभापतित्वमें हुआ । इसमें ८ सभासद उपस्थित थे और २५ ने पत्र द्वारा अपनी सम्मति भेजी थी । (१) सिहोराके माननीय पण्डित विष्णुदत्त शुक्ल बी० ए० रईस और धूलियाके माननीय श्रीधर बालकृष्ण उपासनी नि० भा० वैद्यसम्मेलनके आश्रयदाता निर्वाचित हुए । (२) पूनेके सम्मेलनमें जो आय व्ययका ब्योरा उपस्थित किया गया था और जो "वैद्यसम्मेलनपत्रिका" में प्रकाशित भी हो चुका है, उसे कुछ सुधारके साथ स्थायी समितिमें फिर उपस्थित करने और आय बढ़ानेके उपाय निर्धारित करनेकी बात तय हुई । (३) पटनेके राय पूनमचन्दजी रईसने "प्लेग" पर एक पुस्तक लिखी है, उसे वे वैद्यसम्मेलनके सौ विद्वानोंके पास अभिप्रायके लिये भेजना चाहते हैं; इसलिये निश्चय हुआ कि उनके पास १०० पते भेज दिये जायँ । (४) मन्त्रीकी हरिद्वार यात्रा ऋषिकुलके आयुर्वेद विद्यालयका आयुर्वेदविद्यापीठसे समुचित सम्बन्ध स्थिर करनेके उद्योग और हृषीकेशके कालीकमली आयुर्वेद विद्यालय (जो विद्यापीठसे संयुक्त है) के निरीक्षण और उसके स्थायी तथा सुसंस्कृत बनानेके परामर्शके लिये हुई थी अतएव उसका मार्ग व्यय २०॥)॥ स्वीकृत हुआ । (५) चि० चू० पण्डित ठाकुरप्रसाद मणिका आयुर्वेद विद्यापीठके मन्त्रिपदका कार्यत्यागपत्र उपस्थित किया गया । निश्चय हुआ कि कार्यत्यागका समुचित कारण विदित नहीं होता । इसलिये पं० केदारनाथ चौबे वैद्य और बाबू महावीरप्रसादजी उनके घर जाकर कार्य त्यागपत्र वापस लेने और कारण बतानेका अनुरोध करें । (६) लेफ्टिनेण्ट कर्नल कान्होबा रणछोड़दास कीर्तिकरकी मृत्युपर शोक प्रकाश किया गया और उनके कुटुम्बियोंके पास सहानुभूतिका पत्र भेजना निश्चय हुआ ।

द्वितीय अधिवेशन ।

नि० भा० वैद्यसमेलनसी स्थायी समितिका दूसरा अधिवेशन पं० केदारनाथ चौबे वैद्यके सभापतित्वमें द्वितीय भाद्रपद शुक्ल ७

तारीख २३ सितम्बर सन् १९१७ को हुआ। इसमें पांच सभासद उपस्थित थे और ६० सभासदोंने पत्र द्वारा सम्मति भेजने की कृपा की थी।

इस्तीफा और नियुक्ति—चिकित्सक चूड़ामणि पं० ठाकुरप्रसाद मणिजीने पं० केदारनाथजी चौबे वैद्यराज और बाबू महावीरप्रसाद-जी वैद्यराजके अनुरोध करनेपर भी विद्यापीठका मन्त्रिपद समया-भावका कारण बताकर स्वीकार नहीं किया अतएव निश्चय हुआ कि उनके स्थानपर पं० प्राणनाथ चौबे मन्त्रीका काम करें, पं० प्राणनाथ-जीके रिक्तस्थानपर पं० भगवतदत्तजी वैद्यराज नि० भा० वैद्यसम्मे-लनके सहयोगी मन्त्री हों और पं० ठाकुरप्रसादजी मणि स्थानिक सभासद निर्वाचित हों। पं० रामदयाल शर्मा राजवैद्य रुग्ण रहनेके कारण राजपूताना प्रान्तीय मन्त्रिपदका कार्य नहीं कर सकते इस-लिये उनके स्थानपर वैद्यराज कल्याणसिंहजीकी नियुक्ति हुई और राजवैद्य पं० रामदयालुजी विद्यापीठके सभासद नियुक्त हुए। पञ्जाब प्रान्तीय मन्त्री पं० हेमराज विशारदका भी इस्तीफा स्वीकृत हुआ और उनके स्थानपर वैद्यराज सरदारीलाल नियुक्त हुए। पं० हेम-राजजी पञ्जाब प्रान्तीय सभासदका कार्य करेंगे।

स्त्रियोंके लिये पाठ्यक्रम—ऋषिकेश कालीकमली क्षेत्रके अध्यक्ष बाबा रामनाथजी, ऋषिकेश आयुर्वेद विद्यालयके प्रधानाध्यापक पं० प्रतापसिंह शर्मा आयुर्वेद विशारद, ज्वालापुर प्रयोगशालाके अध्यक्ष पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्यराज, ज्वालापुर महाविद्यालयके पण्डित पद्मसिंह शर्मा, अजमेरके वैद्यराज कल्याणसिंहजीके पत्र उपस्थित किये गये जिनमें कहा गया था कि आयुर्वेद विद्यापीठके पाठ्य क्रममें एक अंश ऐसा होना चाहिये जिसमें स्त्रियोपयोगी विषयोंकी अधिकता रहे और जिन्हें सीखकर व्यवहारोपयोगी स्त्री वैद्य तैयार हो सकें। प्रत्येक चिकित्सक व्यवसायीके सामने पर्देवाली स्त्रियोंकी बीमारीकी विशेष विशेष बातें जाननेमें अड़चन उपस्थित होती है। इसके सिवाय किसी स्त्रीसे स्त्रियां अपनी बातें जितनी सरलतासे बतला सकती हैं और उनकी चिकित्सासे उन्हें जितना आश्वासन मिल सकता है उतना किसी पुरुष वैद्यसे नहीं। इसलिये ऐसी स्त्री चिकित्सिकाएं रोगिणी स्त्री और वैद्यके बीचमें बहुत उपयोगी सहायता पहुँचा

सकती हैं। इसलिये ऐसे पाठ्यक्रमकी आवश्यकता है। इस विषय पर बाहरसे आयी हुई सम्मतियां भी पढ़ी गयीं और निश्चय हुआ कि मद्रास और पूनेके वैद्यसम्मेलनोंने प्रस्ताव द्वारा इसके अनुकूल अपनी सम्मति प्रकाशित की है। अतएव आयुर्वेदविद्यापीठके पाठ्य-क्रममें स्त्रियोपयोगी विषयोंको बढ़ा देनेकी आवश्यकता है। इस विषयका विचार करनेके लिये निम्न लिखित सज्जनोंकी एक उपसमिति बना दी जाती है और इसे अधिकार दिया जाता है कि उपयुक्त विद्वानोंसे परामर्शकर स्त्रियोपयोगी पाठ्यक्रम तैयार करें और उसे अगले सम्मेलनमें उपस्थित करें। इस समितिके संयोजकका भार ज्वालापुर प्रयोगशालाके पं० रामचन्द्र शर्मा पर रहेगा। (१) महामहोपाध्याय कविराज गणनाथ सेन (२) वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथ सेन, (३) वैद्यरत्न पं० डी० गोपालाचार्लू (४) आयुर्वेद मार्तण्ड पं० लक्ष्मीराम स्वामी (५) आयुर्वेद मार्तण्ड पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्य फोर्ट बम्बई (६) पं० प्रतापसिंह शर्मा आयुर्वेद विशारद। (७) वैद्यराज कल्याणसिंह (८) पं० केदारनाथ चौबे वैद्यराज (९) चिकित्सक चूड़ामणि पं० ठाकुरप्रसाद मणि (१०) वैद्य पंचानन पं० कृष्ण शास्त्री कवड़े (११) डाक्टर प्रसादीलाल झा एल० एम० एस० (१२) आयुर्वेद रत्नाकर पं० ब्रजविहारी चौबे (१३) वैद्यराज पं० उमापति वाजपेयी (१४) वैद्यरत्न ठाकुरदत्त शर्मा लाहौर।

विद्यापीठकी पदवियोंकी नकल—हरिद्वारके पण्डित नारायणदत्तजी शर्माका प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि बहुतसे लोग विद्यापीठकी सी पदवी विद्यार्थियोंसे कुछ ले लिवाकर दे दिया करते हैं। इससे पबलिक धोखेमें पड़ती है और विद्यापीठकी पदवियोंकी भ्रान्तिमें लोग छद्म वैद्योंपर विश्वासकर दुःख उठाते हैं। इसलिये जब सम्मेलन रजिस्टर्ड संस्था है तब सूचना दे दी जाय कि कोई विद्यापीठकी पदवियोंकी झूठी नकल न करें। इसपर निश्चय हुआ कि वकीलोंकी सलाह लेकर इस विषयका उचित प्रबन्ध किया जाय।

सभापति और निबन्ध—लाहौर सम्मेलनमें सभापति होने योग्य सात सज्जनोंकी सूची बनायी गयी और अन्यत्र प्रकाशित तेरह

तथा स्वागतकारिणीके निश्चित कुछ अन्य विषयोंपर निबन्ध लिखवानेके लिये स्वागतकारिणीको लिखना निश्चित हुआ।

आयव्ययकी पूर्ति—इस वर्ष आयकी अपेक्षा व्यय अधिक होनेकी सम्भावना है और उसमें कमी होनेसे कार्य-सञ्चालनमें अड़चन होगी। क्योंकि बढ़ते हुए कामोंका केवल अवैतनिक मन्त्रीपर बोझ रहने से पूर्ण कार्य नहीं हो सकता, अतएव एक सहायक और एक क्लर्ककी आवश्यकता है। तीन वर्षोंसे आयुर्वेदका वार्षिक इतिहास नहीं निकला, उसका निकलना आवश्यक है। केवल धर्मार्थ औषधालयके सम्बन्धमें यथाशक्य बाहरी चन्देसे काम लिया जाय। अन्य खर्चके लिये सभासदोंसे प्रार्थना की जाय कि नये सभासदोंकी संख्या बढ़ानेका उद्योग करें, धनियोंको सहायता पहुँचानेके लिये उत्तेजित करें, प्रान्तीय कार्यालय भी इसके लिये उद्योग करें, स्वागतकारिणी सभाको सूचना दी जाय कि आगामी वर्षकी अपील उपयुक्त और अनुकूल समयपर हो, सम्मेलनमें आये हुए प्रतिनिधि और दर्शक जो सभासद न हों वे सभासद बनाये जाया करें, पैसाफण्डके ढङ्गपर एक एक रुपयेके टिकट तैयार कराकर सभासदोंके पास भेजे जायँ और वे उत्साही सज्जनोंसे सहायता प्राप्त करें।

अन्य कार्य—सेवा समिति अपना कार्य कर रही है इसलिये उसे धन्यवाद दिया जाय और कहा जाय कि वह ऐसे प्रस्ताव न पास किया करे जिससे उसके सभासदों और कार्यकारिणीके सदस्योंपर अधिक आर्थिक बोझा पड़े। ऐसा होनेसे सामान्य स्थितिके लोग उसके सदस्य होनेमें हिचकिचावेंगे। सेवा कार्योंके लिये यथा साध्य सर्वसाधारणसे सहायता प्राप्त करनेका उद्योग किया जाया करे। लाहोरकी स्वागतसमितिके मन्त्रीसे अनुरोध किया जाय कि वे अपनी समितिके कामोंकी रिपोर्ट सर्वसाधारणमें बराबर प्रकाशित करते रहें। वैद्यरत्न पं० डी० गोपालाचार्लू, कविविनोद पं० ठाकुरदत्त शर्मा, आयुर्वेद रत्नाकर पं० ब्रजविहारी चतुर्वेदी और वैद्यराज पं० गंगादत्त पन्तको कार्यालयकी सहायताके लिये धन्यवाद दिया जाय। सिन्धके पं० टोपणलाल शर्माजीने सहायता देनेका वचन दिया है, अतएव उन्हें भी धन्यवाद दिया जाय।

आयुर्वेद विद्यापीठ ।

आयुर्वेद विद्यापीठका प्रथम अधिवेशन आषाढ़ शुक्ल ५ और द्वितीय भाद्रपद शुक्ल ७ को पं० केदारनाथ चौबेके सभापतित्वमें हुआ । पहले अधिवेशनमें ८ और दूसरेमें ५ सभासद उपस्थित थे । पहले अधिवेशनमें आयुर्वेद विद्यापीठका परीक्षाफल स्वीकृत हुआ । श्रीयुक्त चतुरसेन वर्माके पत्रपर निश्चय हुआ कि श्रीमती तारावती देवी रेलगाड़ीकी गड़बड़ीसे समयपर लाहौर न पहुँच सकीं और इसीसे वे शारीरकी परीक्षामें सम्मिलित न हो सकीं; अतएव उनके साथ इस समितिकी सहानुभूति है; तथापि उन्हें इस वर्षके भीतर इसकी परीक्षा फिरसे और अलग देनेकी सुविधा नहीं दी जा सकती; क्योंकि इस वर्ष कुछ प्रबन्ध और कुछ रेलकी गड़बड़ीसे अजमेर केन्द्रके बहुतसे परीक्षार्थी परीक्षामें सम्मिलित नहीं हो सके । अतएव उन्हें भी सुविधा दी जानी चाहिये । किन्तु ऐसा होनेसे समितिको पूरी परीक्षाका कार्य करना पड़ेगा । एक परीक्षार्थीके लिखनेका ढङ्ग नियमके विपरीत होनेसे एक परीक्षक महोदयको उसपर सन्देह हुआ था; परन्तु समितिको उस परीक्षार्थीके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिले अतएव केवल सन्देह पर ही उसके सम्बन्धमें कुछ करना समितिने उचित नहीं समझा ।

दूसरे अधिवेशनमें परीक्षाकी तिथियां, परीक्षाके केन्द्र, परीक्षाका क्रम, मौखिक परीक्षाके नियम तथा परीक्षार्थियोंके लिये अन्य कई आवश्यक सूचनाएं निश्चित हुईं, जो अन्यत्र प्रकाशित हैं । गोंडाल-के राजवैद्य पण्डित जीवराम कालिदास और झाड़ेश्वरके वैद्यराज पण्डित अमृतलाल प्राणनाथ पट्टनीने अपने अपने स्थानमें एक एक आयुर्वेद पाठशाला, औषधालय और प्रयोगशाला खोली है । आप लोगोंने पत्र भेजकर इच्छा प्रकट की थी कि हमारी संस्थाका सम्ब-न्ध आयुर्वेदविद्यापीठसे हो जावे । निश्चय हुआ कि आप लोगोंको इस उत्तम कार्यके लिये धन्यवाद दिया जाय और सूचित किया जाय कि आप लोगोंके कार्यसे आयुर्वेदविद्यापीठको हार्दिक सहानुभूति है । आपकी संस्थाएं आयुर्वेदविद्यापीठसे सम्बद्ध समझी गयीं । गुरुकुल कांगड़ीके स्नातक श्रीयुक्त युधिष्ठिर विद्यालङ्कार और वनौ-

षधि प्रकाशके सम्पादक श्रीयुक्त पं० बाबूराम शर्माकी योग्यताके सम्बन्धमें प्रवीण वैद्योंके जो प्रमाणपत्र आये थे उन्हें देखकर निश्चय हुआ कि आप दोनोंको बिना आयुर्वेद विशारद पास किये ही आयुर्वेदाचार्य परीक्षामें बैठनेकी आज्ञा दी जाय। कच्छ प्रान्तमें सबसे प्रथम डाकूर गोपालजी प्रयागजी कोठारीने आयुर्वेदविद्यापीठकी परीक्षोत्तीर्ण पदवी प्राप्त की है और वर्षोंसे चलता हुआ अपना औषधालय आपने सर्वसाधारणके लिये समर्पितकर दिया है। यही नहीं आप उसमें सब दिन अवैतनिक कार्य करेंगे और उसकी प्रतिद्वन्दितामें अपना औषधालय नहीं खोलेंगे। इस कार्यके लिये कच्छकी जनताने बड़े समारोहके साथ आपको अभिनन्दन पत्र दिया है। यह जानकर समितिको प्रसन्नता हुई है कि विद्यापीठकी पदवियोंका जनताकी ओरसे स्वागत हो रहा है। आशा है अन्य पदवीधर भी अपनी योग्यतासे लोगोंका प्रेम सम्पादन करते हुए आयुर्वेदका महत्व बढ़ाते रहेंगे। यह भी निश्चय हुआ कि श्रीयुक्त गोपालाजीको बधाई दी जाय। सहौली लुधियानाके पण्डित मोहनलाल शर्मा वैद्य आयुर्वेद महाविद्यालयके लिये बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं और उधरके लोगोंसे चन्दा वसूलकर भेजवा रहे हैं; अतएव उन्हें धन्यवाद दिया जाय।

सम्मेलनपर सम्मति।

हिन्दी समाचार ६ मार्च सन् १९१७

आशा है कि सुयोग्य वैद्य न मिलनेके कारण अब किसीको मरना नहीं पड़ेगा।

सन्देश, बम्बई, २८ फरवरी १९१७

वैद्य सम्मेलनकी भीड़के कारण यह सप्ताह पूनेवालोंके लिये बड़ी धूमधामका बीता। आज पूनेमें जहां देखो वहां वैद्य और वैद्यसम्मेलनकी ही तैयारी है। स्टेशनसे सदाशिव पेठके मलेकरके बाड़े तक (जहां सभापति ठहरे थे) सब रास्ते मुख्य मुख्य स्थानोंमें ध्वजा-पताका-कमानी आदिसे सजाकर मानो खास अपने लिये रुकवा लिये गये हैं। इस समारम्भके लिये गांव गांव और प्रान्त

प्रान्तके वैद्यवर्य इकट्ठे हुए हैं। इस प्रकार भिन्न भिन्न प्रान्तोंके, भिन्न भिन्न भाषा बोलनेवाले और इस प्रकार भिन्न भिन्न रीतिरवाज तथा पहनाव ओढ़ाववाले लोग आज बहुत वर्षोंसे पूनेमें इकट्ठे नहीं हुए थे। यह वैद्यसम्मेलन सम्पूर्ण हिन्दुस्थानके वैद्योंका है। इस सम्मेलनकी मूल कल्पना यद्यपि महाराष्ट्रमें ही हुई और उसके आद्यप्रवर्तक यद्यपि एक कार्यपटु दक्षिणी कैलाशवासी पदे शास्त्री थे तौ भी इस सम्मेलनने गत सात वर्षोंमें कलकत्ता, मथुरा, मद्रास इत्यादि स्थानोंमें सञ्चारकर अखिल भारतीय वैद्योंमें एक प्रकारका नवजीवन उत्पन्न किया है। सम्पूर्ण हिन्दुस्थानकी आशा और महत्वकांक्षाको भविष्य वसन्त ऋतुकी वायुलहरीने प्रोत्साहित कर रखा है, इसलिये उसमें जब नवीन पल्लव फूट रहे हैं तब यह अकेला आयुर्वेद-वृक्ष जीर्णावस्थामें ही पड़े सड़ा करें यह एक दम असम्भव है। अखिल भारतीय शास्त्र कलाओंके साथ ही आयुर्वेदको भी अपने खजानेकी याद हुई है और वह अभिमानके योग्य अभिमानके तेजसे चमकने लगा है।

गत सात वर्षों तक भिन्न भिन्न प्रान्तोंका संस्कार लेते हुए आज अखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन फिर महाराष्ट्रमें बड़े आनन्द और आठ वर्षके चपलबालके अभिनव उत्साहके अनुरूप अवतीर्ण हुआ है। इस बालकको अपने शहरमें बड़े प्रेमसे गत वर्ष पूनाके वैद्यवर प्राणाचार्य बाल शास्त्री लागवणकरने वैद्य पञ्चानन कृष्ण शास्त्री कवड़ेके जोरदार कार्यकर्तृत्व और पुण्यश्लोक महामुनि अण्णा साहब पटवर्धनकी तपश्चर्याके भरोसे अभिमान पूर्वक निमन्त्रण दिया था। प्राणाचार्य बाबा लागवणकरने नौ दश महीने पहले ही इस कार्यको आरम्भ किया था। तभीसे उनका एक विषय वैद्यसम्मेलन हो गया था। उस ब्राह्मणको नींदमें भी सम्मेलन दिखाई पड़ता था। बाबाकी बड़ी महत्वाकांक्षा थी कि इस वर्षका सम्मेलन अपूर्व होना चाहिये। लागवणकर शास्त्रीका कर्तृत्व भी कुछ कम न था। उनका उत्साह जवानको भी लज्जित करनेवाला था। यदि उन्हें प्लेग न उठा ले गया होता तो यह सम्मेलन आजकी अपेक्षा न जाने कितने गुणा अधिक आदर्श होता; परन्तु ईश्वरकी वैसी इच्छा नहीं थी। ईश्वरने अकेले बाबाको ही नहीं उठा लिया; किन्तु उनके साथ ही डाकृर

वझेको लिया और अभी अभी अरणा साहब पटवर्धनके स्वर्गवाससे आपत्तियोंका वज्रपात ही हुआ। अरणा साहबके जानेपर सम्मेलनके आशातन्तु एक मात्र कवड़े शास्त्री रहे। पूनेके सुदैवसे यह तन्तु अत्यन्त जोरदार और झंझावातकी परवाह न करनेवाला था। कवड़े शास्त्रीके परिश्रम और कार्योंमें अनेक विघ्न टूटे तौ भी जरा ढिलाई नहीं हो सकी। कवड़े शास्त्रीने पूनेके अन्य सहकारी मित्रों-की सहायतासे अत्यन्त जोरोंसे कामका आरम्भ किया और उन्हींका मधुरफल आजका यह ठाठदार वैद्यसम्मेलन है।

श्रीमान् नरेशोंकी सम्मति।

श्रीमान् रीवां महाराजकी सम्मतिसे नि० भा० वैद्यसम्मेलनके प्रतिनिधियोंका एक प्रतिनिधि दल (डेपुटेशन) श्रीमान् भारतीय नरेशोंकी कानफरेन्सके समय दिल्ली गया था और वहां श्रीयुत छुन्नामलकी धर्मशालामें ठहर कर ५ नवम्बरसे १० नवम्बर तक अपना उद्योग करता रहा। १० नवम्बरको नरेशोंकी कानफरेंसकी समाप्ति थी और सब लोग विदा होनेकी तैयारीमें थे; इसलिए डेपु-टेशन भी १० नवम्बर को दिल्लीसे रवाना हो गया। डेपुटेशनमें जिन सज्जनोंका समावेश हुआ था, उनका नामोल्लेख पिछले लेख में हुआ है। श्रीमान् नरेशों और उनके दीवान साहबोंसे जो बात चीत हुई, उसका सारांश मात्र नीचे देते हैं—

श्रीमान् रीवां महाराज—कार्यका आरम्भ कर देनेसे क्रमशः सफलता होने लगेगी। लोग जबतक कार्यवाही नहीं देखलेंगे तबतक सभीको विश्वास होना कठिन है। आपलोग केवल राजा-ओंके ही भरोसे न रहिये। सर्वसाधारणसे भी लीजिये और जो जितना दे सके, उससे वही ग्रहण कीजिये। अपनी सुविधा और श्रद्धाके अनुसार दानी जो दे वही प्रसन्नतासे लिया जाय, किसी पर दबाव डालना ठीक नहीं। अब बहुत वादविवादके बाद आप लोगोंने निश्चय कर लिया है कि विद्यालयका स्थान प्रयाग होगा। अतएव अब प्रयाग में भूमि खरीदनेका उद्योग कीजिये। इस कार्य-

के लिये मैं जब कहियेगा दश हज़ार रुपये देऊंगा। इसके बाद एक किरायेके मकान में कार्यारम्भ कर दीजिये। प्रारम्भिक सामान छः हज़ार रुपये तकका मैं देनेके लिये कह चुका हूं, वह जब आपलोग कहियेगा मंगा देऊँगा। अपनी ज़मीनमें आप पहिले ज़रूरी इमारत तैयार करें। सर्जरीके कामके लिये और संग्रहालयके लिये पहले स्थान पक्का बन जाय। पढ़ानेके लिये पहले साधारण कच्चा स्थान रहे जिससे सुविधा होनेपर अच्छी इमारतमें पढ़ाई होने लगे और यह कच्चा स्थान नौकरोंके रहने तथा अन्य कामों में लग सके। तीन हज़ार रुपये आपको श्रीमान् अलवर नरेशसे मिलही चुके हैं, श्रीमान् जयपुर नरेशका दान भी आवश्यकताके समय मिल जायगा। अब आप अपनेमेंसे उन नवयुवक वैद्योंको चुनकर एक वर्ग बना लीजिये जिन्होंने आयुर्वैदिक ग्रन्थ तो पढ़ लिये हैं; किन्तु उन्हें चीरफाड़का काम और प्रत्यक्ष शारीरकी शिक्षा प्राप्त करना रह गया है। और विद्यार्थियोंको भी पढ़ाइये; किन्तु ऐसे वैद्योंका विशेष वर्ग आप शीघ्र तैयार कीजिये। ये लोग शीघ्र उपयुक्त सर्जन तैयार हो जायेंगे और आपके विद्यालयका एक दृश्य फल शीघ्रही लोगोंको दिखाई पड़ने लगेगा। अभी जबतक द्रव्यकी सुविधा न हो तबतक उन्हीं विद्यार्थियोंको लीजिये जो अपने खर्चसे पढ़ सकते हैं; अथवा आयपर अपने खर्चका बोझा नहीं डालना चाहते। इधर द्रव्य बढ़ानेके उद्योगमें भी लगे रहिये।

श्रीमान् पन्तसचिव भोर—आपलोगोंने बहुत अच्छे काम में हाथ लगाया है। इस समय हमारी यह प्राचीन विद्या अधोगति को पहुँच गयी है। इसे उन्नत करनेमें केवल देशी नरेशोंको ही नहीं सम्पूर्ण भारतीयोंको सचेष्ट होना चाहिये। इस काममें मेरी हार्दिक सहानुभूति है और मैं यथाशक्य इसमें सहायता भी करूँगा। आप मेरे पास वह लिस्ट भेजिये जिसमें अन्य दानियोंका दान लिखा है। आप मुझसे बराबर पत्र-व्यवहार करते रहिये मैं अवश्य उत्तर देऊंगा। (९—१२—१७)

श्रीमान् महारावल राना डूंगरपुर—यह बहुत उत्तम कार्य है। मैं बहुत उत्साहके साथ इसमें सहायता देऊंगा। भारतके

कल्याणके लिये आयुर्वेदकी उन्नति होना बहुत आवश्यक है। मुझे सम्मेलनके संरक्षक होना स्वीकार है। मैं आपलोगोंका परिचय अपने दीवान मि० मोहनलाल ताराचन्द्से कराये देता हूं। इनसे आप विशेष बातें कर लीजिये।

श्रीमान् नवाबजादा पालनपुर—आपलोगोंने बहुत अच्छा कार्य आरम्भ किया है। मुझे आश्चर्य तो यही है कि यह कार्य अबतक क्यों नहीं हुआ। ऐसा आवश्यक कार्य तो इसके बहुत पहले हो जाना चाहिये था। मैं अपनी शक्तिभर इसमें अवश्य सहायता पहुंचाऊंगा। इस विषयमें मुझे अपने पूज्य पिताजीकी सम्मति लेनी होगी, क्योंकि यहां मैं उनका प्रतिनिधि होकर आया हूं।

(८—११—१७)

श्रीमान् महाराज दतिया—यह बहुत अच्छा काम है, मेरी इसमें सहानुभूति है। इसमें सहायता करना हमारा कर्तव्य है। सम्मेलनके संरक्षक होना भी मुझे स्वीकार है।

श्रीमान् राजासाहब सारंगगढ़—यह बहुत अच्छा काम है? इसमें मेरी सहानुभूति है। इसमें मैं यथाशक्ति सहायता करूंगा।

श्रीमान् राजासाहब खैरागढ़—मैं इस स्कीमको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। राजवैद्य पं० मनमोहनलालके द्वारा आपके सम्मेलनके समाचार मुझे कभी कभी मिलते हैं। इसमें सहायता करना प्रत्येक भारतवासीका कर्तव्य है। मैं इस विद्यालयके काममें अवश्य सहायता पहुंचाऊंगा।

श्रीमान् राजरानासाहब झालावाड़—मैंने सब बातें ध्यानसे सुनीं। प्रजाकी रक्षाके लिये आयुर्वेदकी रक्षा और उन्नति करना बहुत प्रयोजनीय है। मैं इस काममें अवश्य सहायता करूंगा। आप मुझसे पत्र-व्यवहार करते रहिये।

श्रीमान् महाराज पटियाला—भारतके सब शास्त्रोंकी रक्षा होना बहुत आवश्यक है। इस काममें मेरी स्वाभाविक सहानुभूति है। मेरे राज्यमें कुछ आयुर्वेदका काम हो भी रहा है। अपने

राजवैद्य पं० रामप्रसादको मैं आपके सम्मेलनोंमें भेजता भी हूं। इस विद्यालयके काममें भी मैं सहायता देऊंगा। आप मेरे दीवान श्रीयुत दयाकृष्ण कौलसे पत्र व्यवहार करें; और अभी मेरा नाम लेकर उनसे मिलें और मेरी ओरसे कहें कि स्वयं मैंने कहा है कि हमारी ये बातें नोट करलें कि हमने इसमें सहायता देने कहा है।

श्रीमान् महाराज नाभा—इस काममें मेरी स्वाभाविक सहानुभूति है। इस विषयको मैं अच्छी तरह विचारूंगा और अवकाशके समय आपकी स्कीम स्वयं पढ़ूंगा।

श्रीमान् जाम साहब नवानगर—मेरी इस काममें सहानुभूति है। मेरे सेक्रेटरीको इस विषयकी सब बातें समझा दीजिये और पत्र व्यवहार करते रहिये।

श्रीमान् महाराज धार—कार्य बहुत अच्छा है। मेरी इस विषयमें सहानुभूति है। इसमें किसने क्या दिया है, इसकी लिस्ट भेजिये तो अपनी सहायता मैं भी पीछे प्रकट करूंगा।

श्रीमान् राजासाहब विलासपुर—हां, यह कार्य बहुत ठीक है। पत्र व्यवहार करते रहिये, मेरी सहानुभूति है।

श्रीमान् महाराज सैलाना—इस कार्यमें प्रत्येक भारतवासीकी स्वाभाविक सहानुभूति होगी। आपने मुझे जब कुछ समझा है और जाना है कि ये एक राजा हैं, तभी तो पूछा है। अतएव मैं इसमें सहायता करनेमें नाहीं नहीं कर सकता। परन्तु कार्यकी मज़बूतीके लिये आप अपना बोर्ड और भी मज़बूत बनाइये। अभी इसमें अधिकतर दक्षिणियोंके ही नाम हैं। इधरके भी बड़े बड़े लोगोंके नाम रहें। जिसमें किसीको रुपये पैसोंकी सुरक्षिततामें सन्देह न रहे।

दीवान साहब कूचविहार—(श्रीयुक्तसेन) हमारे महाराजा साहबका आयुर्वेद पर सर्वदा ध्यान रहता है। हमारे राज्यमें आयुर्वेदकी छः डिसपेंसरियां हैं; और उनमें योग्य वैद्य नियुक्त हैं। देशकी भलाईके लिये सर्वत्र सुयोग्य वैद्योंकी संख्या बढ़ाना सर्वथा आवश्यक है। अतएव आपके प्रयत्न प्रशंसनीय हैं। मैं स्वयं वैद्य वंशका हूं, मेरे बाबाके समय तक आयुर्वेदका व्यवहार होता था। इसके

आयुर्वेद पर सहानुभूति होना मेरा स्वाभाविक धर्म है । आपलोग इसमें बराबर लगे रहें; अवश्य सफलता होगी।

दीवान साहब सीतामऊ—(श्रीयुत यशवन्तराव ठोमरे) हमारे महाराजा साहबका आयुर्वेद पर बहुत प्रेम है । यदि वे इस समय बँगलेमें उपस्थित होते तो आपलोगोंसे बहुत प्रेमसे मिलते। आयुर्वेदकी उन्नति करना प्रत्येक भारतवासीका कर्तव्य है । मैं आपलोगोंके कागजपत्र महाराजा साहबको दिखलाऊँगा। वे इसमें अवश्य सहानुभूति प्रकट करेंगे ।

श्रीमान् राजा साहब बरांव—कालेजका होना बहुत आवश्यक है । आनन्दकी बात है कि उसका काम इतनी सिद्धि पर आ गया है । आप लोग एक मेमोरियल तैयारकर छोटे लाट साहब के पास भेजें । मेमोरियल दो चार प्रभावशाली पुरुषोंके द्वारा जाना चाहिये और उसमें इसके सहायक नरेशोंकानामोल्लेख चाहिये । कमिटी चाहेगी तो मैं डेपुटेशनके साथ चलूंगा ।

"नहि जीवितदानाद्धि दानमन्यद्विशिष्यते ।
यस्मिन् देशे हि यो जातस्तज्जंतस्यौषधं हितम् ॥"

आगामी कुम्भ पर प्रयागमें वैद्यसेवासमितिका कार्य ।

यों तो आप अनेक प्रकारसे दान कर अपने जीवनको पवित्र बनाकर पुण्यभागी बनारहे हैं; परन्तु ध्यान रखिये "जीवदान"के बराबर संसारमें कोई दान नहीं । एक दुःखी रोगसे हाय हाय कर रहा है अगर उसके रोगमें शान्ति हो जाय अथवा जो अकाल मृत्यु-शय्यामें पड़ा मृत्युके दिन गिन रहा है यदि उसकी रोगनिवृत्ति हो जाय तो सोचिये उस रोगीकी आत्मा सुख पाकर कितनी आशीष देगी, इसका विचार बुद्धिमान् स्वयं कर सकते हैं । यद्यपि हमारी कृपालु गवर्नमेण्टने प्रायः बड़े बड़े स्थानोंमें धर्मार्थ औषधालय खोल रखे हैं उनसे जो कुछ फल होता है वह भी प्रत्यक्ष ही है परन्तु बहुतसे धर्मात्मा स्वधर्मरक्षक "प्राण जायँ पर धर्म न जाई"

इस वचनके अनुसार विदेशी औषधियोंका मदिरा आदिकसे सम्पर्क होनेसे सेवन नहीं करते। धन सम्पन्न न होनेसे स्वयं चिकित्सा भी नहीं करा सकते ऐसी दशा में उनको अकाल मृत्यु के पञ्जोंमें फंसकर प्राण खोदेना पड़ता है। इस लिये हम देशवासियों-का कर्त्तव्य है कि अपने दानसे स्वतन्त्र आयुर्वेदीय औषधालय खोल कर पुण्यभागी बनें। एक समय वह था कि भारतका चिकित्सा-शास्त्र (आयुर्वेद) अपने पूर्वज त्रिकालदर्शियोंके ज्ञानरूपी जलप्रवाह से सिञ्चित होकर अपने अङ्ग प्रत्यंगोंसे पुष्ट होकर धर्मार्थ काम मोक्षादिक चतुष्टय साधनाका एकमात्र साधन था और विद्यारसिक धर्मप्रतिपालक भारतीय राजा महाराजा धनसम्पन्न महात्मा लोगों-की उदारतासे अपनी तेजोमयी कीर्त्तिका डंका बजा रहा था। यह कहनेमें अत्युक्ति नहीं कि इसी चिकित्साशास्त्र आयुर्वेदके अंश मात्रसे समस्त चिकित्सा प्रणालियोंका आविर्भाव हुआ, इस बातको सभी योग्य चिकित्सक मानते हैं; परन्तु समय की परिवर्त्तन शील गतिसे वर्त्तमानमें भी आयुर्वेद मरणासन्न हुआ रोग दशामें विनीत भावसे अपनी पहिली दशाको स्मरण कर अश्रुपात बहाता हुआ अपने देशके धनी मानी उदारशील धर्मात्मा सज्जनोंसे पुकार पुकार कर निवेदन कर रहा है "मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।" यद्यपि मर्दुमशुमारी (सेंसस) रिपोर्टसे जाना गया कि ऐसी अवनत दशा में भी भारतीय आयुर्वेद चिकित्सासे भारतकी तीन चतुर्थांशसे अधिक प्रजा लाभ उठाती है; यदि इसकी व्यवस्था प्रबन्ध-रूपमें होजाय तो यह कहनेको संकोच नहीं यह फिर अपनी उन्नत दशामें पहुंच सकती है। आज जो इसका हास्य करते हैं उनका मुख-मर्दन हो सकेगा।

आयुर्वेदके प्रेमियोंको यह जानकर आनन्द होगा कि कुछ कालसे आयुर्वेदोन्नतिके लिये लोग विविध प्रकारसे प्रयत्न कर रहे हैं। चिकित्साका गौरव दिखानेके लिये और जनतामें प्रचार करनेके लिये आयुर्वेद महामण्डलके अनुमोदनसे (वैद्यसेवासमिति) नामक एक समिति संगठित हुई है। इसके सभासद् हरएक जाति और सब सम्प्रदायके व्यक्ति अर्थात् जो वैद्य व्यवसाय करते हों वा जो आयुर्वेदके प्रेमी हों बन सकते हैं। इस समितिका नियम है कि

हर एक सम्प्रदायके बड़े बड़े धार्मिक उत्सवों (मेलों) पर स्वास्थ्यरक्षाके लिये औषधालय और आतुरालय खोले जाया करें। आगामी माघ मासमें श्रीप्रयागराजमें कुम्भका महामेला होगा; उस समय इस समितिकी ओरसे औषधालय और अतुरालय खोले जाँयगे, यात्रियोंकी सेवा की जायगी। जिसका अनुमान व्यय २०००) रुपयेका किया गया है जिसकी योजनासार सूची आपकी सेवामें उपस्थित है।

(१) देश के सभी धार्मिक कार्य सदासे भारतीय राजा महाराजा तथा सेठ साहूकारों श्रीमानोंकी सहायतासे होते रहे और होते रहेंगे। देशकी विद्याकला और धर्म भी आपकी ही सहायतासे जीवित रहे और रहेंगे; इस लिये पूर्ण आशा है कि यह लोकोपकारी कार्य भी आपकी उदारतासे सम्पन्न हो सकेगा।

सज्जनों !

रोगियों के रोग दुःख दूर करने से अधिक पुण्यकार्य संसार में नहीं। श्रेष्ठ पुरुषोंकी विभूति (धन) परोपकारके लिये ही होती है अतः इस सुअवसर में योग देकर पुण्यभागी हूजियेगा।

विनीत—

नारायण शर्म्मा वैद्यराज

मंत्री—वैद्यसेवासमितिकार्यालय, ऋषिकुल, हरिद्वार

वैद्य-सेवा-समितिका

प्रयाग कुम्भ मेले पर कार्य्यक्रम का योजनासार

२ औषधालय	२५ स्वयं सेवक
१ आतुरालय	५ स्त्री स्वयं सेविका
१ प्रबन्धक	८ कहार
१ क्लर्क	४ पाचक
२० वैद्य	१ नाई
२० सहायक वैद्य	१ महतर

प्रयाग कुम्भपर व्ययका अनुमान-पत्र

१००) औषध व्ययमें
४००) किराया सामान मकानआदिमें
३००) मार्गव्यय
१७५) वेतन कहार पाचकादि
४००) भोजनमें
१००) टमटम गाड़ीवग़ैरहका भाड़ा
२२५) छपाई वग़ैरहमें
३००) फुटकर में

सर्वयोग २०००) रु०

रोग विशेष और दवाएँ।

रोग विशेष		औषधियां विशेष
साधारण ज्वर	ये औषधियाँ रोग	मृत्युञ्जय, आनन्दभैरव
सान्निपातिक ज्वर	विशेष से भिन्न हैं।	महाज्वरांकुश
वेला ज्वर		ज्वरमुरारि
अतिसार		पंचवक्त्र
विशूचिका		शुद्धस्फाटिका
शिरःशूल		चन्द्रोदय
प्रतिश्याय		अभ्रक भस्म
खांसी		बंगभस्म
		ताम्रभस्म

रोगविशेष	औषध विशेष
शूल	मल्लभस्म (संखिया)
अजीर्ण	संजीवनी वटिका
श्वास	टंकण क्षार
व्रणादि	लवंगादि वटिका
नेत्र विकार	व्योषादि वटिका
सर्वाङ्ग वेदना	योगराज गूगल

प्लेग	नारायण तैल
	विषगर्भ तैल
	जात्यादि तैल
	तारपीन तैल
	एरण्ड तैल (कास्ट्रायल)
	अमृतधारा (पं० ठाकुरदत्तजी लाहौर)
	सुधासिंधु पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा मथुरा
	हिंग्वाष्टक चूर्ण
	लवणभास्कर चूर्ण
	हरीतक्यादि चूर्ण
	पंचशकार चूर्ण
	कपित्थाष्टक चूर्ण
	दाड़िमाष्टक चूर्ण

रोग विशेष	औषध विशेष	
	लघु गंगाधर चूर्ण लाई चूर्ण पाचक चूर्ण अग्निसंदीपन चूर्ण	ऋषिकुल चिकित्सा-लय के प्रयोग मिलेगा
	गंगोदक	
	शृंगभस्म	
	हरिताल भस्म	
	प्रवालभस्म	
	कनकसुन्दर रस	
	अतिसारवारन रस अहिफेन वटिका लोकनाथ रस	रसेन्द्र सागरोक्त
	लोहासव	
	मरहम आदि	
	कुमार्यासव	
	द्राक्षारिष्ट	
	संजीवनी सुरा	
	दशमूलारिष्ट	
	कनकासव	

कर्पूरासव
लोहभस्म

रोग विशेष	औषध विशेष
	शंख भस्म
	कपर्दिका भस्म
	सुदर्शन चूर्ण
	श्वास कुठार रस
	विशूचिका विध्वंस
	....

(भैषज्यरत्नावलि से)

और वैद्य महानुभाव इन रोगों पर अपने अपने अनुभूत प्रयोग अनुपान सहित भेजने की कृपा करें ।

प्रयाग कुम्भ मेलेपर आवश्यक सामानकी सूची औषधालयों के लिये ।

		प्रत्येक औषधालयों में
४ मेज		२ मेज़
१० कुर्सी	"	५ कुर्सी
६ बेंच	"	३ बेंच
२ हस्तधावन पात्र" (मय) रखने की तिपाई		२ हस्तधावन पात्र (मय) रखने की तिपाई
१० तौलिया हाथ पोंछने को "		५ तौलिया
६ झाड़न	"	३ झाडन,
२ कांटे	"	१ कांटा औषध तोलने को

तादात वस्तु	प्रत्येक औषधालय में
१ अलमारी छोटी	१ अलमारी
टिक्की साबुन बक्स	
कच्ची शीशियां	
५ पिचकारी कांच	
२ वस्ति यंत्र	१ वस्ति यंत्र

दवा रखने की पक्की शीशियां

२ खरल	१ खरल
।ऽ रुई धुनी हुई १० सेर	
२ थान कपड़े के	
स्टेशनरी सामान	
२ रजिस्टर बीमारों के	
२० प्यालियां कांच	
२० ग्लास कांच	

आतुरालय ।

आतुरालयोंके लिये निम्नलिखित वस्तुओंकी आवश्यकता है ।

२० पलंग	प्रत्येकमें चार चार
२० गद्दे बिछाने को	" " "
२० चादर	"
२० तकिये	"
२० मूत्रपात्र	"
२० मलपात्र	प्रत्येक में चार चार
२० जलपात्र	"
१० लोहे की अँगीठियाँ	प्रत्येक में पांच

कोयले
लकड़ी
फिनआइल
सुगन्धित धूप
रोगीपथ्य
चाह
अदरक
साबूदाना
मुनक्का आदि

(कार्य्यालय स्टाक)

२ मेज़
२ बेंच
४ पलंग
स्टेशनरी सामान

आवश्यक सामानका स्टाक ।

भोजनगृह

५ लोटे	२ जलपात्र पीतल	५ परात पीतल की
१० ग्लास	५ पतीली पीतलकी	१० थाली "
१० कटोरी	५ बोलटे बड़े	पत्तल
	२ तवे	मटकैने
		आमान्न (रसद)

निवेदक व प्रकाशक—

नारायणदत्त शर्मा वैद्यराज,

मन्त्री वैद्यसेवासमिति कार्य्यालय, ऋषिकुल, हरिद्वार,

सम्मेलन समाचार

नवम वैद्यसम्मेलन—नवम वैद्य सम्मेलनकी स्वागतकारिणी सम्मतिका संगठन लाहौरमें हो गया। स्वागतकारिणीके प्रधान मन्त्री लाला काशीराम वैद्य हुए हैं। स्वागत मन्त्री वैद्यरत्न ठाकुरदत्त वर्मा और पण्डित रामनारायणजी दुबे हुए हैं। प्रदर्शन मन्त्री कविराज नरेन्द्रनाथमित्र, कोषाध्यक्ष लाला सरदारीलाल वैद्य और पञ्जाब नेशनलबैंक; प्रचार विभाग मन्त्री पण्डित हेमराज विशारद और पण्डित नानकचन्द जी शर्मा हैं। प्रदर्शिनीके काममें पण्डित चुन्नीलाल पण्डित दीनानाथ, पण्डित रामशरण, पण्डित धर्मदेव, महाशय सुखदेव जी सहकारी नियुक्त हुए हैं।

सम्मेलनका समय—लाहौरमें फसली बुखारका जोर रहनेसे उसकी पूर्व तैयारी पहलेसे यथेष्ट नहीं हो सकी। इसके सिवाय अन्य प्रान्त वालोंको लाहौरकी कड़ी सर्दी (दिसम्बर महीनेकी) बरदाश्त नहीं हो सकती, इसलिये सम्मेलनका समय बढ़ा दिया गया है। अब लाहौरका सम्मेलन सम्भवतः आगामी मार्च मास के चौथे सप्ताहमें होगा।

सम्मेलनमें निबन्ध—लाहौरके नवम वैद्य सम्मेलनके निमित्त निम्नलिखित विषयोंपर निबन्ध लिखाना सोचा गया है। आयुर्वेदके विद्वानोंसे अनुरोध है कि उत्तम निबन्ध तैयारकर भेजनेका प्रयत्न करें। (१) आयुर्वेद विद्यापीठका भविष्य आयुर्वेद महाविद्यालय (२) संक्रामक रोगोंकी अनागत चिकित्सा (३) भारतमें प्लेग न रहनेका यत्न (४) मधुमेह और बहुमूत्रके दूर होनेका उपाय (५) श्वास-कास-क्षय और अन्तर्विद्रधिपर अलग अलग निबन्ध (६) यकृत और प्लीहापर निबन्ध (७) सरकारमें आयुर्वेदका गौरव किस प्रकार बढ़ाया जाय (८) वनस्पतिजन्यअन्नकी शक्ति और पुष्टि तथा प्राणिजन्य अन्नकी शक्ति और पुष्टि (९) अन्त्र-वृद्धि, हिस्टीरिया और हार्टडिज़ीज (१०) भूतविद्याका आयुर्वैदिक सिद्धान्त रहस्य और चिकित्सा (११) "दिनाई" रोगका विवेचन (मनुष्यको शेर, तेंदुआ आदिकी पूंछके बाल अथवा सर्पका विष अथवा भेड़कका मांस चावलमें भिगाकर अथवा पान आदिके साथ खिला देते हैं, जिससे मनुष्य बीमार होकर धीरे धीरे कृश होता जाता और अन्तमें मर जाता है। इसे "दिनाई" रोग कहते हैं। बहुतसे उसकी चिकित्सा भी करते हैं, जिसमें वमन विरेचन कराते हैं।) (१२) आर्य वैद्यकमें जन्तु शास्त्र (Baotirialogy) (१३) आयुर्वेदकी वैज्ञानिकता और शास्त्रीयता।

लाहौरमें प्लेग—स्थायी समितिने निश्चय किया है कि लाहौरका वैद्यसम्मेलन २२ मार्चसे किया जावे जिससे सम्मेलन समाप्त कर जो लोग चाहें होलीके लिये घर लौट सकें अथवा उधरसे ही इन्दौरके हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें जा सकें। किन्तु सुनते हैं कि लाहौरमें प्लेगका आरम्भ हुआ है और पिछले वर्षोंके अनुभवसे मालूम पड़ता है कि मई तक लाहौरकी हवा साफ न होगी। यदि ऐसा हो तब गर्मियोंमें सम्मेलन करना कठिन होगा और बरसातके बाद तुरन्त दिल्लीमें सम्मेलन करना असम्भव होगा। इसलिये हमारी समझमें अप्रेल महीनेके भीतर ही सम्मेलन कर डालना चाहिये। सम्मेलनका स्थान और प्रतिनिधियोंके ठहरानेका प्रबन्ध शहरके बाहर होनेसे भी काम चल सकता है।

पं० सुदर्शनाचार्य बी० ए० कर्नलगञ्ज प्रयागने 'सुदर्शन प्रेस' में मुद्रित किया और जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्यने प्रयागके दारागञ्जसे प्रकाशित किया।